इस्पात क्षेत्र H1 FY2026-27: घरेलू माँग से तैयार इस्पात की खपत 7.6% बढ़ी; मसौदा नीति "विज़न 2047" तैयार

कोर उद्योग और अर्थव्यवस्था | समाचार संदर्भ: 23 अक्टूबर 2026 (पीआईबी, इस्पात मंत्रालय) | प्रकाशित: 23 अक्टूबर 2026

खबरों में क्यों

इस्पात मंत्रालय ने अप्रैल-सितंबर 2026 (वित्त-वर्ष 2026-27 की पहली छमाही, यानी H1) के क्षेत्र-आँकड़े जारी किए हैं (पीआईबी, 23 अक्टूबर 2026)। ये आँकड़े संयुक्त उद्योग समिति (JPC) के अनंतिम (provisional) आकलन पर आधारित हैं। साथ ही मंत्रालय ने मसौदा राष्ट्रीय इस्पात नीति — “विज़न 2047” तैयार करने की जानकारी दी है; यह अभी मसौदा-स्तर पर है, अधिसूचित नीति नहीं।



मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com

उत्पादन, खपत और व्यापार

- **उत्पादन:** H1 में कच्चे इस्पात (crude steel) का उत्पादन 85.1 मिलियन टन रहा — पिछले वर्ष की इसी अवधि से 2.9% अधिक। तैयार इस्पात (finished steel) का उत्पादन 82.0 मिलियन टन (+4.1%) रहा।
- **खपत:** तैयार इस्पात की खपत 85.0 मिलियन टन (+7.6%) रही। खपत की रफ़्तार उत्पादन से तेज़ है, जिसका प्रमुख चालक घरेलू माँग बताई गई है।
- **व्यापार-स्थिति:** इस अवधि में भारत तैयार इस्पात का **शुद्ध आयातक** रहा, यानी आयात निर्यात से अधिक रहा।

- **क्षमता:** शीर्ष-7 उत्पादकों (SAIL, RINL, NSL, TSL समूह, AM/NS, JSL/JSPL, JSW समूह) की कच्चे-इस्पात क्षमता 117.4 मिलियन टन है; देश की कुल क्षमता 223 मिलियन टन है।

मसौदा नीति "विज़न 2047" के प्रमुख लक्ष्य

- 2047 तक कच्चे-इस्पात क्षमता **604 मिलियन टन** (वर्तमान 223 मिलियन टन से ऊपर)।
- प्रति-व्यक्ति इस्पात खपत **302 किग्रा** और निर्यात **45 मिलियन टन** का लक्ष्य।
- उत्सर्जन-तीव्रता (प्रति टन इस्पात पर कार्बन-डाइऑक्साइड की मात्रा) 2.54 से घटाकर लगभग **1.54 tCO_2 प्रति टन** करने का लक्ष्य।

विश्लेषण: आँकड़े क्या कहते हैं

खपत में तेज वृद्धि: आँकड़ों से तैयार इस्पात की खपत (+7.6%) उत्पादन (+4.1%) से तेज बढ़ती दिखती है। विज्ञप्ति में इस वृद्धि का प्रमुख चालक घरेलू माँग बताया गया है — यह मंत्रालय का आकलन है; केवल इन आँकड़ों से वृद्धि का कारण सिद्ध नहीं होता।

क्षमता, खपत और आयात — तुलना की सीमा: देश की कच्चे-इस्पात क्षमता 223 मिलियन टन (वार्षिक आधार) है, जबकि 85 मिलियन टन तैयार इस्पात की छमाही खपत है — दोनों की अवधि और उत्पाद-आधार अलग हैं, इसलिए इनकी सीधी तुलना से निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। इसी तरह, भारत का इस अवधि में तैयार इस्पात का शुद्ध आयातक रहना एक तथ्य है, पर केवल इससे आयात का कारण तय नहीं किया जा सकता — आयातित उत्पादों की श्रेणी, गुणवत्ता, कीमत और उपलब्धता का अलग अध्ययन आवश्यक है।

विकास-पर्यावरण संतुलन की चुनौती: "विज़न 2047" एक साथ दो लक्ष्य रखता है — क्षमता 223 से 604 मिलियन टन (लगभग ढाई गुना) और उत्सर्जन-तीव्रता 2.54 से घटाकर लगभग 1.54 tCO2 प्रति टन। दोनों लक्ष्य एक साथ तभी पूरे हो सकते हैं जब नई क्षमता कम-कार्बन तकनीक पर आए; अक्टूबर 2026 तक 104 ग्रीन स्टील प्रमाणपत्र इसी दिशा के शुरुआती कदम हैं।

नीति-स्थिति की समझ: "विज़न 2047" अभी मसौदा है, अधिसूचित नीति नहीं — इसलिए इसके लक्ष्य सरकार की दिशा दर्शाते हैं, बाध्यकारी प्रतिबद्धता नहीं। इसी तरह H1 के आँकड़े JPC के अनंतिम आकलन हैं और संशोधित हो सकते हैं। परीक्षा-उत्तर में यह सीमा स्पष्ट रखनी चाहिए।

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

भारत में इस्पात की खपत और उत्पादन के हालिया रुझानों का विश्लेषण कीजिए। इस अवधि में भारत का तैयार इस्पात में शुद्ध आयातक रहना किन संभावित कारकों की ओर संकेत कर सकता है, और "विज़न 2047" के दोहरे लक्ष्य (क्षमता-विस्तार तथा उत्सर्जन-तीव्रता में कमी) की चुनौतियों का आकलन कीजिए। (GS-III: भारतीय अर्थव्यवस्था — उद्योग; 250 शब्द)

उत्तर की रूपरेखा:

भूमिका में: समाचार का संदर्भ रखें: इस्पात मंत्रालय (पीआईबी, 23 अक्टूबर 2026) के अप्रैल-सितंबर 2026 (H1) के आँकड़े संयुक्त उद्योग समिति (JPC) के अनंतिम आकलन पर आधारित हैं, और "विज़न 2047" अभी मसौदा नीति है, अधिसूचित नहीं। इन दोनों सीमाओं का उल्लेख शुरू में ही करें।

मुख्य भाग में: पहले खंड में H1 के रुझान समझाएँ: कच्चे इस्पात का उत्पादन 85.1 मिलियन टन (+2.9%), तैयार इस्पात का उत्पादन 82.0 मिलियन टन (+4.1%) और खपत 85.0 मिलियन टन (+7.6%); खपत उत्पादन से तेज़ बढ़ी है और प्रमुख चालक घरेलू माँग बताई गई है, जो मंत्रालय का आकलन है। दूसरे खंड में शुद्ध आयातक स्थिति रखें और केवल संभावित कारकों की ओर संकेत करें (आयातित उत्पादों की श्रेणी, गुणवत्ता, कीमत और उपलब्धता); लेख के अनुसार केवल इन आँकड़ों से कारण तय नहीं होता, इसलिए कारण को निश्चित बताकर न लिखें। क्षमता (223 मिलियन टन, वार्षिक) और छमाही खपत की सीधी तुलना न करें, क्योंकि दोनों की

अवधि और उत्पाद-आधार अलग हैं। तीसरे खंड में "विज़न 2047" के दोहरे लक्ष्य रखें: क्षमता 604 मिलियन टन (वर्तमान 223 मिलियन टन से ऊपर) और उत्सर्जन-तीव्रता 2.54 से लगभग 1.54 tCO_2 प्रति टन; चुनौती यह समझाएँ कि दोनों लक्ष्य तभी साथ पूरे हो सकते हैं जब नई क्षमता कम-कार्बन तकनीक पर आए, और अक्टूबर 2026 तक 104 ग्रीन स्टील प्रमाणपत्रों को शुरुआती कदम बताएँ। लेख में न दिए गए आँकड़े, लागत या समय-सीमा न जोड़ें।

निष्कर्ष में: संतुलित निष्कर्ष लिखें: माँग और उत्पादन के रुझान सकारात्मक दिखते हैं, पर आयात के कारणों का अलग अध्ययन ज़रूरी है। मसौदा लक्ष्य सरकार की दिशा दर्शाते हैं, बाध्यकारी प्रतिबद्धता नहीं, और H1 के अनंतिम आँकड़े संशोधित हो सकते हैं; यह सीमा अंत में दोहराएँ।

अन्य घटनाक्रम

- MOIL का H1 मैंगनीज़-अयस्क उत्पादन 0.96 मिलियन टन के साथ रिकॉर्ड रहा।
- अक्टूबर 2026 तक 104 उत्पादकों को ग्रीन स्टील प्रमाणपत्र (कम-कार्बन इस्पात की मान्यता) मिल चुके हैं।
- SAIL ने PM-SETU के तहत ओडिशा, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल में ITI-क्लस्टर के लिए MoU किए; NMDC और SAIL ने GIFT-IFSC में सहायक कंपनियाँ बनाईं।
- रूसी ऊर्जा सप्ताह (14-16 अक्टूबर, मास्को) में भारत सहयोगी देश रहा।

परीक्षा की दृष्टि से

प्रारंभिक — H1 उत्पादन/खपत आँकड़े, शुद्ध-आयातक स्थिति, विज़न 2047 के लक्ष्य, ग्रीन स्टील प्रमाणन। मुख्य परीक्षा (GS-III) — कोर उद्योग का प्रदर्शन और हरित-परिवर्तन (उत्सर्जन-तीव्रता में कमी) की दिशा।

स्रोत और सीमाएँ

- पीआईबी (इस्पात मंत्रालय), 23 अक्टूबर 2026 (पढ़ा): https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2327351
- **सीमाएँ:** आँकड़े JPC के अनंतिम आकलन हैं और संशोधित हो सकते हैं। "विज़न 2047" अभी मसौदा-स्तर की नीति है, अधिसूचित नहीं।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

संक्षिप्त उत्तर: इस्पात मंत्रालय ने अप्रैल-सितंबर 2026 (वित्त-वर्ष 2026-27 की पहली छमाही, यानी H1) के क्षेत्र-आँकड़े जारी किए हैं (पीआईबी, 23 अक्टूबर 2026)। ये आँकड़े संयुक्त उद्योग समिति (JPC) के अनंतिम (provisional) आकलन पर आधारित हैं।

प्रश्न: इस्पात क्षेत्र के H1 आँकड़ों और विज़न 2047 की नीति-स्थिति क्या है?

इस्पात मंत्रालय ने अप्रैल-सितंबर 2026 (वित्त-वर्ष 2026-27 की पहली छमाही, यानी H1) के क्षेत्र-आँकड़े जारी किए हैं (पीआईबी, 23 अक्टूबर 2026)। ये आँकड़े संयुक्त उद्योग समिति (JPC) के अनंतिम (provisional) आकलन पर आधारित हैं। साथ ही मंत्रालय ने मसौदा राष्ट्रीय इस्पात नीति - "विज़न 2047" तैयार करने की जानकारी दी है; यह अभी मसौदा-स्तर पर है, अधिसूचित नीति नहीं।

प्रश्न: तैयार इस्पात की खपत और उत्पादन में वृद्धि का क्या रुझान था?

खपत में तेज वृद्धि: आँकड़ों से तैयार इस्पात की खपत (+7.6%) उत्पादन (+4.1%) से तेज बढ़ती दिखती है। विज्ञप्ति में इस वृद्धि का प्रमुख चालक घरेलू माँग बताया गया है - यह मंत्रालय का आकलन है; केवल इन आँकड़ों से वृद्धि का कारण सिद्ध नहीं होता।

प्रश्न: विज़न 2047 में क्षमता और उत्सर्जन-तीव्रता के क्या लक्ष्य बताए गए?

विकास-पर्यावरण संतुलन की चुनौती: “विज़न 2047” एक साथ दो लक्ष्य रखता है - क्षमता 223 से 604 मिलियन टन (लगभग ढाई गुना) और उत्सर्जन-तीव्रता 2.54 से घटाकर लगभग 1.54 tCO_2 प्रति टन। दोनों लक्ष्य एक साथ तभी पूरे हो सकते हैं जब नई क्षमता कम-कार्बन तकनीक पर आए; अक्टूबर 2026 तक 104 ग्रीन स्टील प्रमाणपत्र इसी दिशा के शुरुआती कदम हैं।